कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर
मंडोर – 342 304, जोधपुर, राजस्थान
(Agriculture University Jodhpur)
MANDOR -342 304, Jodhpur, Rajasthan

डॉ एम एल मेहरिया
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

दिनांक :–26.02.2019

–::क्षैत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति (जर्क) की बैठक संपन्न::–

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर में दो दिवसीय क्षेत्रीय अनुसंधान एवं प्रसार सलाहकार समिति की बैठक का समापन आज दिनांक 26.02.2019 को कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर में हुआ। इस कार्यक्रम का शुभारंभ व अध्यक्षता करते हुए डॉ0 बी. आर. चौधरी, निदेशक अनुसंधान ने बैठक में आये हुए वैज्ञानिकों एवं कृषि विभाग के अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमारे सामने कृषि के क्षेत्र में कई चुनौतियाँ हैं। जिनमें मुख्य रूप से सिंचाई के पानी, मृदा में कार्बनिक पदार्थों व सूक्ष्म पौषक तत्वों की कमी व मृदा स्वास्थ्य में गिरावट आदि। इन चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि इस प्रकार के अनुसंधान करें ताकि इन चुनौतियों का सामना किया जा सकें तथा किसानों की आय में बढ़ोतरी हो।

हर वर्ष की भांति कृषि में अनुसंधान सलाह एवं नये अनुसंधान कार्यक्रम को तय करने हेतु खरीफ 2019 की इस बैठक जोधपुर, बाड़मेर, व नागौर, जिलों में स्थित विभिन्न कृषि अनुसंधान संस्थान, आफरी, काजरी, कृषि अनुसंधान केन्द्र, कृषि विज्ञान केन्द्र तथा कृषि विभाग में कार्यरत कृषि वैज्ञानिक व कृषि अधिकारी शामिल होते हैं। इस बैठक में खरीफ 2019 हेतु नये अनुसंधान कार्यक्रम तय करने व खरीफ 2018 में हुए अनुसंधानों की समीक्षा कर किसानों के लिए निम्नलिखित नई किस्में व उन्नत तकनीकों की सिफारिश की गई जो कृषि खण्ड प्रथम अ के लिए '**पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेज**' में शामिल करने हेतु अनुमोदित की गई–

1. मूंग के लिए जीऐएम.5 व जीऐएम.6 किस्में।
2. मूंग की फसल के लिए 2 प्रतिशत यूरिया के साथ 75 पीपीएम सेलीसेलिक अम्ल के घोल का फूल आते समय छिड़काव।
3. मूंगफली की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए पेंडामैथालिन 30 ईसी + ईमेजाथापर 2 ईसी का 750–1000 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर बुवाई के तुरंत बाद या खड़ी फसल में 15–20 दिन के फसल होने पर सोडियम एसिफ्लोरफेन 16.5 प्रतिशत + क्लोडिनाफोप प्रोपार्जिल 8 प्रतिशत के सक्रिय तत्त्व का 180–200 ग्राम प्रति हैक्टेयर।
4. बाजरा की फसल में जिंक सल्फेट (21 प्रतिशत जिंक) का 25 किलो ग्राम प्रति हैक्टेयर का प्रयोग बुवाई के समय व खड़ी फसल में फेरस सल्फेट का 0.5 प्रतिशत के घोल का बुवाई के 30 और 45 दिन बाद छिड़काव।
5. तिल की फसल में पर्णीय रोगों के नियत्रण के लिए ट्राईफ्लोक्सी स्ट्रोबिन 25 प्रतिशत +टेबूकोनाजोल 50 प्रतिशत का आधा ग्राम प्रति लीटर के हिसाब से छिड़काव।

इस अवसर पर निदेशक शिक्षा, डॉ. सीताराम कुम्हार ने तिल की विकसित नई किस्म आर टी 372 के बारे में बताया कि जल्द ही किस्म किसानों के उपलब्ध होगी।

उक्त सम्बन्ध में क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान, डॉ. मनमोहन सुन्दरिया द्वारा अवगत कराया गया कि किसानों की समस्याओं का जो फीडबैक प्राप्त हुआ है, उस आधार पर इन समस्याओं के निदान हेतु आने वाली खरीफ ऋतु में हमारे वैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान किया जाएगा।

बैठक में संयुक्त निदेशक कृषि विभाग जोधपुर–श्री वी.के. पाण्डे, संयुक्त निदेशक उद्यान विभाग जोधपुर–श्री टी.के जोशी, क्षेत्रीय प्रबंधक राजस्थान राज्य बीज निगम श्री वी.एस. सोंलकी, श्री ओ.पी. पाण्डेय, उपनिदेशक ऐटीसी, रामपुरा सहायक निदेशक कृषि डॉ. जे.आर. भाखर, सहित जोधपुर व बाड़मेर, जिलों के कृषि क्षेत्र के विभिन्न वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों ने भाग लिया ।

(डॉ. एम. एल. मेहरिया)